NCERT Solutions for Class 9 Hindi (Kshitij)

Chapter 8 – वाख

1. 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर: रस्सी यहाँ मनुष्य के शरीर के लिए प्रयुक्त हुआ है और यहाँ रस्सी कमजोर अथवा नाशवान है, अर्थात यह कब टूट जाये क्या पता ।

2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर: कवयित्री इस सांसारिकता और मोह के बंधनों से नहीं निकल पा रही है। ऐसे में वह प्रभु कि भक्ति भी सच्चे मन से नहीं कर पा रही है। अतः उसे लगता है कि उसके द्वारा कि जा रही सारी प्रार्थना व्यर्थ हुई जा रही है। इसलिए उसके द्वारा मुक्ति के प्रयास भी व्यर्थ हो रहे हैं।

3. कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से तात्पर्य है, भगवान से मिलना। कवयित्री इन भावों के सागर को पार कर अपने प्रभु कि शरण में लीन होना चाहती है।

4. भाव स्पष्ट कीजिए:

(क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।

(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।

उत्तर:

क) कवयित्री कहना चाहती हैं कि इस दुनिया में आकर वह दुनियादारी में उलझ कर रह गईं हैं और जब अंतिम वक्त आया और जेब टटोली तो कुछ भी हासिल न हुआ।अब उसे चिंता सता रही है कि भवसागर को पार करवाने वाले मांझी अर्थात प्रभु को उतराई के रूप में क्या देगी।

ख) प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री मनुष्य को प्रभु की प्राप्ति के मार्ग को अपनाने को कहती है। कवयित्री कहती है कि व्यक्ति को भोग विलास में पड़कर कुछ भी हासिल नहीं होता। व्यक्ति जब सांसारिक भोगों को पूर्ण रूप से छोड़ देता है तब उसके मस्तिष्क में अहंकार की भावना की उत्पत्ति होती है। अंतः भोग-त्याग, सुख-दुःख के बीच का मार्ग अपनाने को यहाँ कवयित्री कह रही है।

5. बंद द्वार कि साँकल के लिए ललध्दद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर: बंद द्वार कि सांकल के लिए ललध्दद ने उपाय सुझाया है कि भोग-विलास और त्याग के मध्य संतुलन बनाए रखना। मानव को दुनियादारी के विषयों में ना ही अधिक खोना चाहिए और न ही अधिक दूर जाना चाहिए, उसे मध्य के मार्ग को अपनाना चाहिए।

6. ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?

उत्तर: उपर्युक्त भाव निम्न पंक्तियों में व्यक्त हुआ है:

आई सीधी राह से, गई ना सीधी राह।

सुषम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह।

जेब टटोली, कौड़ी न पाई।

मांझी को दूं, क्या उतराई?

7. 'ज्ञानी' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उत्तर: 'ज्ञानी' से कवयित्री का अभिप्राय है - जिसने आत्मा और परमात्मा के रिश्ते को जान लिया हो। कवयित्री के अनुसार प्रभु का निवास कण कण में है सर्वत्र है, लेकिन मानव इसे धर्म कि श्रेणियों में बांट कर मंदिर और मस्जिद में ढूंढ रहा है। वास्तव में ज्ञानी तो वह है जो अपने भीतर प्रभु को ढूंढ लेता है।

रचना और अभिव्यक्ति

8. हमारे संतो, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है –

(क) आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है?

(ख) आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

उत्तर:

क) समाज में बसे भेदभाव के कारण निम्न हानियाँ हो रही है:

१. हिंदुओ और मुस्लिमों का झगड़ा इसी भेदभाव कि देन है, जिसके फलस्वरूप भारत और पाकिस्तान नामक दो देश बने।

२. भेदभाव की वजह से ही उच्च और निम्न वर्गों में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पा रहा।

३. त्योहारों के वक्त अनायास झगड़ों की उत्पत्ति हो जाती है।

४. आपसी भेदभाव की वजह से ही एक वर्ग दूसरे वर्ग को संदेह और अविश्वास की निगाह से देखते हैं।

५. भेदभाव की वजह से ही अलगाववाद, उग्रवाद और तनाव जैसी स्थितियों की उत्पत्ति होती है।

ख) आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं:

१. आपस में भेदभाव मिटाने के लिए सर्वप्रथम उन विषयों के ऊपर वार्तालाप ही ना करें, जिससे यह भेदभाव उत्पन्न होता हो।

२. सरकार अपनी नीतियों से जातियों में होने वाले भेदभाव को बढ़ावा न दें।

३. राजनीतिक दल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए धार्मिक संवेदनाओं का सहारा न लें।

४. नौकरियों, शिक्षा और किसी भी अन्य सरकारी योजनाओं में आरक्षण को बढ़ावा न देकर, बल्कि योग्यता के आधार पर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करना चाहिए।

५. स्कूली शिक्षा भी एकता और क्षमता पर आधारित हो।